INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

# दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता : उपभोक्ता संस्कृति की यथार्थ तस्वीर

प्रा. दशरथ काशिनाथ खेमनर
हिंदी विभाग,
पद्मश्री विखे पाटील कॉलेज, प्रवरानगर

***शोध सारांश:***

सुरेंद्र वर्मा ने अपने उपन्यासों में उपभोक्ता समाज की विसंगतियों, विशेषकर आधुनिक शहरी जीवन में टूटते मानवीय रिश्तों, अकेलेपन और पहचान के संकट को, समसामयिक जीवन की कतिपय समस्याओं, विसंगतियों के संघर्ष में टूटते-बिखरते मनुष्य के मानसिक विघटन, टूटन, पारिवारिक और सामाजिक तनावों से टूटते व्यक्ति और उनकी विभाजित तथा कुंठित मानसिक स्थिति का सूक्ष्म अंकन किया है। उनका उपन्यास साहित्य व्यक्ति के आंतरिक तनावों और सामाजिक दबावों के बीच खोखले होते रिश्तों और उपभोक्तावादी मूल्यों के प्रभावों का मार्मिक चित्रण करता है। उपभोक्तावादी समाज में व्यक्ति अति महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर अपनी व्यक्तिगत सुख की खोज में विफल मन:स्थिति में अधूरापन और अलगाव महसूस करता है। इस दृष्टि से उनका 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास उपभोक्ता समाज की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र नील और भोला अपने व्यक्तिगत सुख की खोज में ऐसे रास्ते अपनाते हैं, जिसमें नील मरकर भी ज़िंदा लाश बन जाता है और भोला गुनाहों की दुनिया में डूबकर ज़िंदा होकर भी मुर्दा बन जाता है। उपभोक्तावाद के जाल में फँसकर दोनों के लिए यह रास्ता मौत का गुलदस्ता साबित होता है।

***बीज शब्द:*** *उपभोक्ता समाज, बाजारवाद, अकेलापन, कुंठा, घुटन, काम संबंध, अंतर्द्वंद्व, विफलता, विकलता*

उपभोक्तावादी संस्कृति में भौतिक वस्तुओं, सेवाओं का उपभोग जीवन का मुख्य लक्ष्य बन जाता है। कम श्रम में जीवन को शालीन बनाने की अति महत्वाकांक्षी वृत्ति व्यक्ति को अवैध रूप से पैसा कमाने पर मजबूर करती है। इस होड़ में मानवीय रिश्ते कमजोर होते हैं, नैतिकता घटती है और व्यक्ति भौतिक पैमानों को महत्व देने लगता है। सुरेंद्र वर्मा का 1998 में प्रकाशित यह उपन्यास अर्थार्जन और व्यक्तिगत सुख की खोज में अपना सब कुछ खोए हुए नील और भोला नामक दो युवकों की रोमांचक कथा है। वर्मा जी का 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' उपन्यास उपभोक्तावादी समाज की क्रूर हकीकत को दर्शाता है, जहाँ व्यक्ति अपनी योग्यता को बाज़ार में बेचकर ही जी सकता है। मुंबई जैसे महानगरीय जीवन पर आधारित इस उपन्यास के नील, भोला, पारुल, नैन और शालू प्रमुख पात्र हैं। नील और भोला अर्थार्जन के लिए क्रमशः दिल्ली और मथुरा छोड़कर मुंबई जैसे महानगर में आते हैं। महानगरीय जीवन के आकर्षण ने व्यक्तिगत सुख की खोज ने दोनों को इतना प्रभावित किया है कि नील अमीर घरों की अधेड़ उम्र की स्त्रियों के लिए पुरुष वेश्या बन जाता है, तो भोला

अंडरवर्ल्ड की पनाह लेता है। अपराधी और गुनाहों की दुनिया के साथ जुड़े होने के कारण अंत में दो ज़िंदा-दिल युवक मुर्दा बनकर रह जाते हैं ।

उपन्यास का प्रमुख पात्र नील एक होनहार और चिंतनशील युवक है। दिल्ली में डॉ. शर्मा के निर्देशन में पीएच.डी. कर रहा है। साथ ही दिल्ली के किसी कॉलेज में इतिहास का प्राध्यापक के तौर पर कार्यरत है। पर डॉ. शर्मा की भतीजी किरण के साथ उसके अनैतिक संबंधों के कारण डॉ. शर्मा उसे पूरी तरह से बर्बाद कर देते हैं। प्रतिशोध की आग में जलता हुआ नील पैसा कमा कर अपना भविष्य बनाने के लिए मुंबई महानगर की पनाह लेता है, परंतु परिस्थिति उसे पुरुष वेश्या बनने के लिए मजबूर करती है। फलत: आत्म-ग्लानि, अपराधीपन और हीनता बोध से ग्रस्त होकर वह घुटने पर विवश होता है। सोमपुरिया सेठ की विवाहित बड़ी बेटी पारुल उससे गर्भवती रहती है। नील मात्र नैन से विवाह के सपने देखता है। ऐसे में पारुल के घर वाले भोला के जरिए माफियों तक जाते हैं और नील की हत्या करवाते हैं। सुरेंद्र वर्मा ने मनोविज्ञान का आधार लेकर नील के व्यक्तित्व को गढ़ा है। संपूर्ण उपन्यास में नील अंतर्द्वंद्व, हीनता बोध, पश्चाताप, ग्लानि और अपराधीपन के कारण विचलित और उद्विग्न व्यक्तित्व के रूप में चित्रित हुआ है।

भोला उक्त उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है। मथुरा से पचपन किलोमीटर दूर गाँव में रहनेवाला भोला अपना सब कुछ खोकर अर्थार्जन के लिए मुंबई में आता है। उसकी और नील की भेंट रेल में होती है। मुंबई में आकर व्यक्तिगत सुख के लिए वह अंडरवर्ल्ड की पनाह लेता है । परिणामत: गुनाहों की दुनिया में भोला बुरी तरह से फँस जाता है। जब उसका मित्र नील नैन से विवाह का प्रस्ताव रखता है, तब पारुल के घरवाले उसे कुचल देते हैं और भोला के जरिए हत्या की सुपारी देकर नील को मार डालते हैं। परिस्थिति के सामने हताश अल्पशिक्षित भोला अपने ही मित्र की हत्या को रोक न पाने के कारण अपराध बोध का शिकार होता है।

सुरेंद्र वर्मा ने इस उपन्यास के माध्यम से स्त्री-पुरुषों के प्रेम तथा काम-संबंधों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है। पति-पत्नी के रिश्तों में भावात्मक लगाव के अभाव में उत्पन्न उबाऊपन और विच्छेद के कारण उत्पन्न तनावपूर्ण मानसिक संघर्ष का मनोवैज्ञानिक अंकन विवेच्य उपन्यास में हुआ है। पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण और जीवन के प्रति बदली हुई भोगवादी सोच के कारण रिश्तों के प्रति निर्मम हुई युवा पीढ़ी को आर्थिक विवशताओं ने निरंतर जूझने पर काफ़ी मजबूर किया है, जिसका स्त्री-पुरुषों के संबंधों पर गहरा असर पड़ा है। इन बदली हुई परिस्थितियों के चलते स्त्री-पुरुषों ने अपनी नैतिकता तथा मर्यादाओं का बहुत उल्लंघन किया है। परिणामत: निराशा, विवशता, विफलता, पश्चाताप, अपराधीपन, वितृष्णा, हीनता बोध आदि अनेक मनोभावों का शिकार होकर इस उपन्यास के पात्र नील और भोला को मानसिक तनाव सहने पर बाध्य होना पड़ता हैं। उनकी विभिन्न भावात्मक स्थितियों का मनोवैज्ञानिक चित्रण आलोच्य उपन्यास में हुआ है।

नील अपने अनैतिक व्यवहार के कारण पश्चाताप की भावना से आहत है। अपने ही शोध-निदेशक डॉ. शर्मा की भतीजी किरण के प्रति आकर्षित होकर नील उससे काम संबंध बनाता है, जिससे वह गर्भवती रह जाती है। परिणामत: डॉ. शर्मा उसे भला-बुरा सुना कर अकादमिक संसार से हमेशा के लिए बर्बाद कर देते हैं।

अध्यापन में रुचि रखने वाला नील पीएच.डी. करके अपनी दुनिया बसाना चाहता था, परंतु इस एक घटना ने उसके जीवन की दिशा ही बदल दी। डॉ. शर्मा के इस अनपेक्षित व्यवहार ने नील का पूरा भविष्य बर्बाद कर दिया। सब कुछ खोए हुए नील को अब अपने किए पर पश्चाताप हो रहा है। पश्चाताप की आग में वह तिल-तिल जलता है, तड़पता है। इस बेबस स्थिति में वह डॉक्टर शर्मा से याचना करता है कि, "सर मुझसे बहुत भयंकर पाप हुआ है। आप ही बताइए, मैं क्या करूँ ? मैं जैसे नरक की आग में जल रहा हूँ।"[1] पश्चाताप से उत्पन्न इस मानसिक स्थिति में नील निरंतर तनाव महसूस करता है। उक्त संवाद में उसकी आंतरिक कचोट दिखाई देती है। डॉ. शर्मा की कुदृष्टि के कारण दिल्ली की अकादमिक दुनिया से वह पूरी तरह से बेदखल होकर बर्बाद हो जाता है। छह महीनों के भीतर ही वह जिंदा लाश बनकर रह जाता है। अपने करियर को लेकर उसके सारे सपने एक पल में खत्म हो जाते हैं। यदि वह यह गलत काम नहीं करता तो शायद डॉ. शर्मा की कृपा दृष्टि से वह स्थायी रूप से प्राध्यापक बन जाता। यह ख़याल उसे बहुत चुभता है। परिणामत: पश्चाताप की आग में झुलस कर वह निरंतर मानसिक यातना झेलने के लिए अभिशप्त होता है।

उपभोक्ता समाज में हर चीज़ की एक कीमत होती है और व्यक्ति अपनी प्रतिभा या शरीर को भी बेचकर उस चीज को हासिल करने का निरंतर प्रयास करता है। इस प्रयास में वह अपनी मर्यादा, संस्कार, नैतिकता को भी तिलांजली देने पर मजबूर होता है। व्यक्ति का यह व्यवहार जब उसकी नैतिकता से मेल नहीं खाता है, तब उसकी अंतरात्मा उसे आंतरिक रूप से कचोटती है। ऐसे में वह अपराध बोध महसूस करता है। नील और भोला उपभोक्ता समाज इसी चकाचौंध में अपराध बोध का शिकार हुए हैं। अपना भविष्य सँवारने के लिए मुंबई जैसी माया नगरी में आने के बाद नील पुरुष वेश्या बन कर अनेक स्त्रियों के संपर्क में आता है। मेहताब जी के यहाँ नौकरी करते समय सबसे पहले वह उनकी सहेली कुमुद के संपर्क में आता है। अड़तीस वर्षीय कुमुद की आकर्षक देह पर नील अपने पुरुषत्व को न्योछावर कर देता है। कुमुद से वह काम संबंधों के कई गोपनीय रहस्यों को जान लेता है। ऐसे ही एक दिन उसकी मुलाक़ात अधेड़ उम्र की ब्लॉसम नामक स्त्री से होती है, जिसका पति सात साल पहले स्वर्गवासी हुआ है। नील को पहले तो उसके अधेड़ उम्र के शिथिल हुए शरीर को देखकर ग्लानि महसूस होती है। फिर उसकी कामासक्त स्थिति को देखकर न चाहते हुए भी वह उसकी यौन तृप्ति कराता है। ब्लॉसम ने ऐसे अनेक युवकों से पैसे देकर काम-संबंध बनाए हैं। जब वह नील को शरीर सुख के बदले में पैसे देने लगती है, तब उसको झटका सा लगता है। ब्लॉसम के इस व्यवहार से नील के मन में अपराध बोध की भावना उत्पन्न होती है। इस संदर्भ में सुरेंद्र वर्मा लिखते हैं- "बढ़ती हुई धड़कन के बीच अचानक नील को दो एहसास हुए- ढली हुई मांसपेशियों की ग्लानि नोटों की झलक से विलीन हो गई और साथ ही ब्लॉसम का अपराधी-सा चेहरा उसे अपराध बोध से भर गया।"[2] इस अपराधीपन की स्थिति में उसने नोट जेब में डाल दिए, परंतु जब वह दरवाज़े से बाहर निकलता है, तो क्षणभर सोचता है कि उसका सूक्ष्म पारदर्शी रुपाकार उसे ऊपर से देख रहा है। मुंबई आने के उसके मक़सद को लेकर उसका अपराधी मन उसे आंतरिक रूप से कचोटता है। परिणामत: मानसिक तनाव का शिकार होकर वह घुटने पर मजबूर होता है।

वही भोला अंडरवर्ल्ड की दुनिया के साथ जुड़ा होने के कारण अपराध बोध की भावना का शिकार हुआ है। उसके हाथों से कई अपराध हुए हैं। इलियास भाई का वह बहुत भरोसे का आदमी होने के कारण अत्यंत कम समय में उसने अंडरवर्ल्ड की दुनिया में विश्वास संपादन किया है। इसी कारण इलियास बड़े विश्वास से उसको काम सौंपता है। ऐसे ही एक दिन इलियास भाई की वफ़ादारी करते हुए उसके हाथों से किसी कंपनी के यूनियन के नेता का कत्ल होता है। इस घटना से भोला के अंतर्मन में हलचल मच जाती है। हनुमान जी का भक्त होने के कारण एक परिवार को उजाड़ने के अपराध में उसकी अंतरात्मा उसे कचोटती है। उसे अपने किए पर अपराधीपन महसूस होने लगता है। इस संदर्भ में वह नील से कहता है कि, "मैं मथुरा लौट जाऊँगा। मैंने कैसे-कैसे अपराध किए हैं और उनके कैसे-कैसे नतीजे निकले हैं। मैं गफूर का भागीदार था, जब यूनियन के नेता को ठिकाने लगाया गया। उसके घर में फाकों की नौबत आ गई। उसकी जोरू ने दो बच्चों के साथ कीड़े मारने की दवा पीकर दुनिया छोड़ दी। जवान ननद भी इस समझौते में शामिल थी, पर नसीब की मार, वह बज गई। अभी सुना, वह रातरानी में नंगे नाच की नौकरी पर लग गई है-शालू की जगह। एक ईमानदार आदमी का हसता-खेलता कुटुंब हमारे हाथों उजड़ गया। उसकी आह नहीं लगेगी क्या ?"[3] उक्त कथन भोला की अपराधी मानसिकता को उजागर करता है। अपराध बोध के कारण वह मानसिक तनाव का शिकार होता है। वह अंदर से इतना विचलित और उद्विग्न हो जाता है कि उसे निरंतर यही लगता है कि वह अपराधी दुनिया के साथ क्यों जुड़ गया ? इस घटना के बाद वह अपनी पत्नी शालू को लेकर भी काफ़ी चिंतित रहने लगता है। फलतः आंतरिक तनाव का सामना कर रहा भोला निरंतर अपराध बोध की यातना में घुटने पर बाध्य होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बदली हुई परिस्थितियों के कारण व्यक्ति की जीवन शैली में काफ़ी परिवर्तन आता है। ऐसे में आधुनिक सभ्यता के प्रभाव स्वरूप जीवन के प्रति बदली हुई मानसिकता का सबसे ज्यादा प्रभाव स्त्री-पुरुषों के संबंधों पर पड़ा है। दफ़्तरी सभ्यता और भोगवादी स्वच्छंद मनोवृति का यह परिणाम हुआ कि व्यक्तिगत सुख की खोज में व्यक्ति रिश्तों को लेकर असंवेदनशील बनने लगा। साथ ही सामाजिक और नैतिक दबावों के कारण उसकी इच्छापूर्ति में अवरोध निर्माण होने लगा। अतः इस विपरीत स्थिति में व्यक्ति चेतन-अचेतन के इस मानसिक संघर्ष में द्वंद्व के कारण घोर निराशा महसूस करने लगा। इस उपन्यास के पात्र नील और भोला अपने अनैतिक व्यवहारों के कारण घोर निराशा में डूब जाते हैं। मुंबई आने के बाद कुछ ही समय में नील डिप्रेशन में चला जाता है। पुरुष वेश्या के रूप में अब तक उसने अनेक स्त्रियों के साथ काम संबंध बनाएँ हैं। परंतु उनमें कुमुद एक मात्र ऐसी स्त्री रही है, जिसके प्रति उसके मन में आत्मीयता का भाव जाग उठा था। कुमुद के साथ उसका केवल शारीरिक नहीं, बल्कि भावात्मक संबंध रहा है। कुमुद उसकी सच्ची चाहत थी। पर मेहताब जी द्वारा कुमुद की शादी की ख़बर सुनते ही उसके भीतर कहीं भूचाल-सा आ जाता है। कुमुद की याद में वह स्वयं को बहुत निराश पाने लगता है। कुमुद के वियोग में उसने निराशा के बहुत दंश झेले हैं। कुमुद की स्निग्ध हँसी, कामना भरी चुहल, प्रखर हास्य नील को छटपटाता है। कुमुद की शादी से पहले वे दोनों अंतिम बार मिले थे। एस्टोरिया के रूम नंबर 302 में जिस्म की तड़प बुझने के बावजूद कुमुद

को हमेशा के लिए खोने की घोर निराशा में नील का व्यक्तित्व आंतरिक रूप से तिलमिला जाता है। कुमुद उसके जीवन से भले ही हमेशा के लिए चली जाती है, परंतु उसकी यादों को वह भूल नहीं पाता है। रात को नींद नहीं आना, रात के दो-तीन बजे उठकर बैठ जाना, संगीत सुनना, किताबों के पन्ने पलटते रहना, नींद की गोलियाँ खाना आदि कुमुद की याद में किए गए उसके क्रिया-व्यापार उसकी घोर निराशा को मुखरित करते हैं। निराशा की इस स्थिति में वह मानसिक रूप से टूट जाता है। अतएव कुमुद के बारे में वह भीतर ही भीतर सोचता रहता कि, “जो क्षण उन्होंने साथ जिए थे, वे जीवंत और गहन थे। उनके स्पर्श के साथ उन क्षणों की लंबी परंपरा स्पंदित होने लगती थी। उस गहनता का सार उन दोनों की आँखों में प्रतिबिंबित होने लगता था। कुमुद की अनुपस्थिति से उसके व्यक्तित्व का वह अंश कट गया, जो उनसे जुड़ा था। दर्द सिर्फ़ इस अंश के काटने का नहीं है। कुमुद के माध्यम से उसने भावनाओं की जिस तरह की सघनता पहचानी थी- जिसने उसके भाव तंत्र के तापमान को ऊँची, तपती डिग्री तक ला रक्खा था, वह अचानक चौथाई रह गई थी, जैसे टोंटी घुमा देने पर फव्वारे की तीव्र सबल धाराएँ कँप-कँपाकर नन्ही फुहारों में बदलने लगती हैं...अब वह हाँफने लगा है। फ़िज़ा में जैसे उतनी हवा नहीं रह गई, जितनी में साँस लेने का वह आदी था। वह हीन और रहित हो गया है ।”[4] कुमुद की याद ने नील को मानसिक रूप से बहुत छला है। परिणाम स्वरूप उसके अंतर्मन की गहरी निराशा उसे छटपटाने पर बाध्य करती है।

कुमुद के बाद पारुल ही ऐसी है, जिसके आकर्षक शरीर को देखकर वह स्वयं को रोक नहीं पाया था। पति के शीघ्रपतन की समस्या के कारण यौन कुंठा से पीड़ित पारुल का पति से झूठ बोलकर दो-तीन दिन के लिए बार-बार नील के फ्लैट में आकर रहना और अपनी कामाग्नि को शांत करना नील को अच्छा नहीं लगता है। ऐसे में पारुल के पति जयंत के कहने पर पारुल के साथ दूरी बनाकर वह उनका टूटा हुआ घर बचाने की कोशिश करता है। अपने परिवार को बचाने के लिए जयंत नील से पारुल की भीख माँगता है। बदले में वह नील के हाथों में पैसों का बंडल थमाता है। दूसरों का घर-संसार बर्बाद करके अपना भविष्य सँवारने के अपराध में वह स्वयं को हीन महसूस करता है। उसे ख़ुद से ही शर्म आने लगती है। आत्महीनता के भाव से पीड़ित उसका चेतन मन बार-बार यही सोचता है कि, “मैं अपने भावनाहीन स्पर्श का भुगतान लेता हूँ, थोड़े भावनाओं वाले स्पर्श लेने वाली स्त्री से मूल्यवान भेंट लेता हूँ और आज उस स्त्री के पति से अपने अँधेरे रिश्ते को बाहरी धूप से बचाए रखने के लिए मैंने रिश्वत ली है।”[5] अतएव जेब में रखा पैसों का बंडल नील को काँटे की तरह चुभने लगता है। जयंत के सामने उसको अपने किए पर शर्म आने लगती है। वह स्वयं को तुच्छ और नीच समझने लगता है। इस मानसिक अवस्था में उसका व्यक्तित्व छटपटाने के लिए अभिशप्त होता है।

नील ने पहली बार सच्चे मन से किसी लड़की से प्रेम किया है, तो वह नैन है। बातचीत के दौरान नैन जब भी नील को उसके काम को लेकर सवाल करती है, तो नील असहज होकर एक तो बात बदल देता था या फिर झूठ का सहारा लेता था। यह झूठ उसे हीनता बोध से भर देता है। जब भी वह नैन को देखता, तो उसे ख़ुद की काली करतूत याद आतीं। अपने प्रदूषित शरीर के साथ उसके सामने आने का नैतिक साहस वह जुटा नहीं पाता है। हर समय उसका मन उसे कचोटता था कि नैन के साथ वह छल कर रहा है। नैन के भोले और

पवित्र व्यक्तित्व के आगे वह स्वयं को नफ़रत की दृष्टि से देखता है। यही कारण है कि हीनता बोध की वजह से उसके कई दिन अनिश्चय और तनाव में बीते हैं। उस दौरान जैसे ही नैन का निर्दोष चेहरा उसके सामने कौंध जाता, वैसे वह हीन भाव से भर जाता था। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र नील परिस्थिति के सामने संपूर्ण रूप से हताश और बेबस रूप में चित्रित हुआ है। उसका समस्त मनोजगत निराशा, घुटन और द्वंद्वात्मक रूप में उपन्यास में मुखरित हुआ है।

गुनाहों की दुनिया के साथ जुड़ जाने के कारण भोला अंतर्द्वंद्व और आत्म-ग्लानि का भाव महसूस करता है। माँ और बहन के साथ मथुरा में रहते समय वह अपने गाँव के संस्कार कभी नहीं भूला था। हनुमान जी का भक्त होने के कारण वह बड़ा ही संवेदनशील व्यक्ति था। पिता की मृत्यु के बाद उसके काका ने उसकी ज़मीन हड़प ली और उसे बेघर कर दिया। फिर भी उसने अपनी मर्यादाओं को नहीं छोड़ा। अब बहन की शादी तथा घर-परिवार की जिम्मेदारियों को अपने कंधों पर लेकर पैसे कमाने हेतु वह मुंबई में आता है। परंतु दुर्भाग्यवश वह अंडरवर्ल्ड की अपराधी दुनिया के साथ जुड़ जाता है। पैसे कमाने के ख़ातिर धीरे-धीरे उसका व्यक्तित्व इतना परिवर्तित हो जाता है कि गाली-गलौज, खून, डकैत, ड्रग्स पहुँचाने जैसे गुनाहों का वह भागीदार होता है। ऐसे में अपने अतीत को याद कर भोला आत्म-ग्लानि से भर जाता है। उसे अपने किए पर शर्मिंदगी महसूस होती है। पश्चाताप की भावना से आहत भोला अपनी आंतरिक पीड़ा नील माथुर से कहता है-"मथुरा में भाँग के आगे किसी चीज को हाथ नहीं लगाया। यहाँ कौन-सा नशा है, जो मुझसे छूटा हो ? एक दिन मांस न मिले, तो मुँह का स्वाद बिगड़ जाता है...कैसा पतन हो गया है मेरा।"[6] भोला का अंतर्मन उसे बार-बार कचोटता है कि वह इस जाल में क्यों फँस गया ? मथुरा छोड़कर वह मुंबई क्यों आया ? अंडरवर्ल्ड की अपराधी दुनिया के साथ जुड़कर वह अपने गलत कार्यों तथा व्यवहारों को लेकर निरंतर पश्चाताप और शर्मिंदगी महसूस करता है। संस्कारों तथा मर्यादाओं से युक्त अतीत और गुनाहों से भरा भयावह वर्तमान के सघन द्वंद्व में परिस्थिति के सामने पूरी तरह से विवश भोला संपूर्ण उपन्यास में स्वयं के प्रति ग्लानि महसूस करता हुआ दिखाई देता है।

**निष्कर्ष:-**

उक्त विवेचन के आधार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यह उपन्यास उपभोक्ता समाज, अपराध दुनिया, माफिया संस्कृति, बाज़ारवाद और मानवीय मूल्यों तथा नैतिकता का पतन जैसे गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डालता है। साथ ही उपभोक्तावादी समाज की क्रूर हकीकत को दर्शाते हुए स्त्री-पुरुष संबंधों की पोल खोलता है, जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के घोर पतन का कारण बना है। पाश्चात्य जीवन शैली के प्रभाव स्वरूप व्यक्तिगत सुख की खोज में दिग्भ्रमित हुई आधुनिक युवा पीढ़ी की तनावपूर्ण मानसिक स्थितियों का सूक्ष्म अंकन नील और भोला के माध्यम से इस उपन्यासों में हुआ है। महानगरीय जीवन में आधुनिक पढ़े-लिखे मध्यमवर्गीय परिवारों की जीवन के प्रति बदली हुई सोच को यह उपन्यास मुखरित करता है। सुविधा भोगी प्रवृत्ति के कारण यंत्रवत बनी महानगरीय युवा पीढ़ी अकेलेपन की त्रासदी से आहत हैं। ऐसे में रिश्तों के प्रति उत्पन्न हुई निर्ममता उन्हें घुटने पर विवश करती है। सुरेंद्र वर्मा के इस उपन्यास में बाज़ारवाद तथा उपभोक्ता

संस्कृति के प्रभाव स्वरूप अनेक कारणों से उत्पन्न व्यक्ति के खालीपन की पीड़ा, निराशा, विवशता, संत्रासजन्य स्थिति, द्वंद्व और अस्तित्वगत संघर्ष के मानसिक तनाव का यथार्थ चित्रण मिलता है। निश्चित रूप से सुरेंद्र वर्मा का 'दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता' यह उपन्यास उपभोक्ता संस्कृति की यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत करता है।

**संदर्भ सूची :-**

1. सुरेंद्र वर्मा, दो मुर्दों के लिए गुलदस्ता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय सं.-2016, पृष्ठ-11
2. वही, पृष्ठ-88
3. वही, पृष्ठ-177
4. वही, पृष्ठ-110
5. वही, पृष्ठ-187
6. वही, पृष्ठ-177

• **Copyright & License:**
© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.